Gold Coins of Samundra Gupta

समुद्रगुप्त एक महान विजेता थे जिसने 40 वर्षों तक शासन किया। उसके शासनकाल में विभिन्न प्रकार की मुद्राये प्रचलित की गई। कुछ तो सिक्के कलात्मक दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट समझी जाती है उन्होने सिर्फ सोने के मुद्राएँ प्रचलित की जो निम्नलिखित है।

(1) ध्वजधारी प्रकार :— इस प्रकार की मुद्राएं समुद्रगुप्त की मुद्राओं में सर्वाधिक प्रचलित है। यह समुद्रगुप्त की प्रथम प्रकार की स्वर्णिम मुद्रा है। इस प्रकार के सिक्के सहारनपुर से कलकत्ता तक सर्वत्र पाये गये है। इन सिक्कों की तौल 10.5 ग्रेन और कुछ की 122 ग्रेन है।

इन सिक्को के अग्रभाग में कोट, पायजामा टोपी तथा आभूषण पहने राजा की खड़ी मूर्ति बनी है। बाये हाथ में गरुड़ध्वज तथा दाहिने हाथ से राजा अग्नि में आहुति डाल रहा है वेषभूषा और खड़े होकर आहुति डालने का ढंग विदेशी है। यह कुषाणों की मुद्रा का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है। इसलिए ये प्राचीनतम गुप्त मुद्राये कही जा सकती है। इस मुख्य पर राजा प्रभामण्डल युक्त बायी ओर खड़ा है। राजा की बाँह के नीचे समुद्र या समुद्रगुप्त लिखा है। सिक्के के वृत्ताकार किनारे और उपगीति छन्द है:—

"समर शत वितत विजयो जित रिपु रजितो दिवम् जयति" — है

अर्थात् शत्रुओं के अजेय दुर्गों को जीतनेवाला, जिसने सैकड़ो युद्धों में विजयी प्राप्त की है —

पृष्ठभाग पर प्रभामण्डल युक्त देवी (लक्ष्मी)

सिक्के की पृष्ठभाग पर लक्ष्मी सिंहासन पर बैठी जो अपने बायें हाथ में कार्नुकोपिया अथवा कमल कली तथा दाहिने हाथ में पाश धारण किये है। लक्ष्मी का पैर कमलासन पर स्थित है। ध्वजधारी कोटि की मुद्राओं की भाँति इनमें भी देवी सामने मुंह किये है किनारा बिन्दीदार है, बायीं ओर प्रतीक तथा दाहिनी ओर "कृतान्त परशुः" उत्कीर्ण है।

5. <u>अश्वमेध प्रकार</u> :→

प्राचीन भारतीय मुद्रा कला में अश्वमेध सिक्के सर्वोत्तम उदाहरण कहे जा सकते हैं। इन मुद्रा की तौल 112.5 ग्रेन से 119 ग्रेन है। बिहार और उत्तर प्रदेश में बहुत संख्या में यह मुद्रा मिली है

इस प्रकार के सिक्के के अग्रभाग पर बाईं ओर अश्वमेध के सामने खड़ा है। जीन रहित घोड़े के गले में पट्टा है उसकी पीठ पर लम्बा तिकोना पट्टा है। कुछ मुद्राओं पर नीचे एक छोटी वेदी घोड़े के नीचे "सि" अक्षर उत्कीर्ण है। घोड़ा सुन्दर और सजीव है। मोतियों की माला से उसे अलंकृत किया जाता है। उपजाति छंद में "राजाधिराज" पृथ्वीमविता दिवं जयत्याहतवाजिमेधः" या "राजाधिराजः पृथ्वीमवित्वा दिवं जयत्याहृत वाजिमेधः" उत्कीर्ण है अर्थात् महाधिराज, जिसने पृथ्वी को जीत कर अश्वमेध यज्ञ किया।

सिक्के के पृष्ठभाग पर सम्भवतः राजमहिषी बायें खड़ी है। वह शरीर पर साड़ी, चोली, कुण्डल हार, भुजदण्ड तथा कंकण धारण किये है, दाहिने हाथ में ~~कन्धे~~ कन्धे के दाहिनी ओर ~~चँवर~~ चाँवर लिए, बाया हा

तौलिया से युक्त बगल में फुलाये खड़ी है बायीं ओर लाल वंश एक बनियावा है और माला तथा पैरों के पास और एक नूरैखला है तथा कुछ मुद्राओं में पैरों के पास तर की दिखाई पड़ती है, कोई प्रतीक नहीं है, मुद्रालेख "अजयविक्रम पराक्रम" उत्कीर्ण है।

6. व्याघ्र निहंता प्रकार :— ये सिक्के शासक समुद्रगुप्त के अंतिम काल में तैयार किये गए क्योंकि इसे मुद्रा निर्माण की कुशलता का पूर्णरूप से परिचय मिलता है। इस प्रकार की मुद्रा प्रथम संख्या में मिली है। इसका तौल 111 से 117 ग्रेन तक है तो सिक्के अभी तक 6 मिले हैं।

इस मुद्रा के पृष्ठभाग भारतीय वेश-भूषा (पगड़ी, जाकेट, तथा धोती पहने) में आभूषण धारण किए, हाथ में धनुष-बाण लिए हुए व्याघ्र पर झपटता तथा उसे पैर से कुचलता हुआ दिखाया गया है। बाँये हाथ के नीचे "व्याघ्र: पराक्रम" लिखा है। राजा दाहिने हाथ में धनुष तथा बायें हाथ में प्रत्यंचा कान तक खींचते हुए दर्शाया गया है। व्याघ्र के पीछे बायीं ओर परशुधारी कोटि की भांति, "अर्द्धचन्द्रयुक्त ध्वज" अंकित है।

पृष्ठभाग में देवी गंगा "मकर" पर बायीं ओर खड़ी ऊपर तक बनी, साड़ी, चोली, कुण्डल, हार, भुजबन्ध और कंगन पहने हुए बायें हाथ में कमल लिए है तथा दाहिना हाथ खाली है, बायीं ओर नाल सहित अर्द्धचन्द्रयुक्त ध्वज अंकित है। इन मुद्राओं पर "व्याघ्र पराक्रम" अथवा "राजा समुद्रगुप्त" लिखा मिलता है।

° वीणाधारी सिक्के → वीणाधारी सिक्कों में भी हमें

के 34 प्रकार मिलते हैं। कुछ तो बड़े आकार वाले सिक्के हैं कुछ छोटे आकार वाले हैं। बड़े आकार वाले सिक्के हल्के हैं। जबकि छोटे आकार वाले सिक्के भारी हैं। पहले 34 प्रकार में राजा-रानी पहने हुए हैं और उनके दबाव से गद्दी में बदलाव आ गई है। इसके 34 प्रकार में राजा नंगे सिर है उसके केश तीन भागों में नीचे गिर रहे हैं। इसमें लेख अधूरा है। यह सिक्के भी अल्प संख्या में मिले हैं। इनमें से कुछ सिक्के आकार में बड़े हैं जिनकी तौल 111 ग्रेन से 186 ग्रेन तक हैं। कुछ छोटे आकार वाले सिक्के 119 ग्रेन से 121 ग्रेन तक के मिलते हैं। इस प्रकार की मुद्रा के अग्रभाग में राजा पर्यंक पलंग पर हाथ में वीणा लिए हैं। धोती, भुजबन्द, हार, पहिने हैं। वृत्ताकार में "महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्त" लिखा है। पृष्ठभाग में लक्ष्मी-प्रभामंडल युक्त आसन पर बैठी हैं। बायें हाथ में कार्नकोपिया और दाहिने हाथ में पाश लिए हैं। लेख "समुद्रगुप्त" लिखा है।

सम्राट की वीणावादन की निपुणता का वर्णन प्रयाग प्रशस्ति में भी मिलता है इन मुद्राओं से भी उनके संगीत प्रेम की व्यापकता का पता चलता है। इस मुद्रा में देवी के बायें हाथ में कार्नकोपिया के अतिरिक्त शेष सभी चीजें भारतीय हैं। मुख्य भाग में उत्कीर्ण वीणा से यह अनुमानित होता है कि पृष्ठभाग में उत्कीर्ण आकृति संगीत की देवी वीणावादिनी सरस्वती हैं।